डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा 'भारत–चीन साहित्य मंच' का आयोजन

नई दिल्ली। 25 सितंबर 2018। साहित्य अकादेमी में आज भारत–चीन साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें शंघाई लेखक समिति की उपाध्यक्ष सुश्री वांग लेन के अतिरिक्त वेनजुन क़िन और झाङ् दिंघाओ ने भाग लिया। कार्यक्रम में चीनी दूतावास के अधिकारी यंग जुन एवं झाङ जियानकिन भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों ने उनसे अनेक प्रश्न पूछे जिसका तीनों लेखकों ने समुचित उत्तर दिया।

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी का स्वागत करते हुए बताया कि चीन के साथ साहित्य अकादेमी का सांस्कृतिक आदान प्रदान पिछले तीस वर्षों से निरंतर चल रहा है। उन्होंने दोनों देशों के प्राचीन संबंधों का उल्लेख करते हुए कहा कि साहित्य ही इन संबंधों को और मजबूती प्रदान कर सकता है। सभी भारतीय लेखकों के परिचय के बाद शंघाई लेखक समिति की उपाध्यक्षा ने शंघाई लेखक समिति द्वारा किए जा रहे विभिन्न कार्यों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि इस संगठन से हजार से भी ज्यादा लेखक जुड़े हुए है जो आठ विभिन्न विधाओं के लिए कार्य करते हैं। उन्होंने रवींद्रनाथ टैगोर का उल्लेख करते हुए कहा कि वे चीन में बहुत लोकप्रिय हैं और उनका गहरा प्रभाव वहाँ देखा जा सकता है। आगे उन्होंने कहा कि समिति युवाओं एवं बच्चों के साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए भी विभिन्न कार्य कर रही है। कार्यक्रम के अंत में भारतीय लेखकों द्वारा विभिन्न जिज्ञासाएँ प्रकट की गईं, जिनमें प्रमुख थीं – चीनी साहित्य पर भूमंडलीकरण का प्रभाव, वहाँ पर पुस्तक पढ़ने की संस्कृति तथा अल्पसंख्यक समुदायों के साहित्य की स्थिति आदि।

कार्यक्रम में जेएनयू के चीनी विभाग से बी.आर. दीपक, हेमंत अदलखा सहित अनेक वरिष्ठ साहित्यकार – सत्यव्रत शास्त्री (संस्कृत), अजगर वजाहत (हिंदी), चंद्रमोहन (अंग्रेजी), मोहन चुटानी (सिंधी), सुरेश ऋतुपर्ण (हिंदी) अमरेंद्र खटुआ, सुजाता शिवेन (ओड़िया) एव ंबी.एल. गौड़, मोहन हिमथानी, अमन मुदि आदि अन्य लेखक एवं पत्रकार एवं दूरदर्शन एवं आकाशवाणी के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

(के. श्रीनिवासराव)

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

कविता का परिदृश्य वैविध्यपूर्ण होने के साथ–साथ आशा का संचार करनेवाला है, लेकिन कर्तव्यनिष्ठ आलोचक का अभाव खटकने वाली बात है। जाने–माने मैथिली कवि श्री रमेश ने कहा कि मैथिली कविता का वर्तमान परिदृश्य समाज की विकृतियों की आलोचना भी है तथा समाज कविता में अपना चेहरा भी देखता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि मैथिली कविता को सवर्ण समाज के दायरे से बाहर निकालकर दलित, पिछड़ा, वंचित एवं मुस्लिम समाज तथा मिथिला के सभी क्षेत्रों तक कवियों को ले जाना चाहिए। उपेक्षित समाज को मैथिली कविता का मुख्य स्वर एवं मुख्य प्रतिपाद्य बनाना समय की माँग है। सत्राध्यक्ष डॉ. भीमनाथ झा ने कहा कि उनके विचार से वर्तमान मैथिली कविता चिंतन प्रधान अधिक है, जबकि पूर्व की मैथिली कविता भावप्रधान थी, दिल के ज्यादा करीब थी। उन्होंने यह भी कहा कि आज की कविता एकरूप ज्यादा है। कविता पढ़कर कवि की पहचान प्रायः संभव नहीं।

काव्योत्सव के दो सत्र कविता–पाठ के लिए समर्पित थे, जिनकी अध्यक्षता श्रीमती शेफालिका वर्मा और श्री बुद्धिनाथ मिश्र ने की। कविता–पाठ करनेवालों में सर्वश्री सियराम झा सरस, विभूति आनंद, विद्यानंद झा, कुमार मनीष अरविंद, सुरेंद्रनाथ, सदरे आलम गौहर, रमण कुमार सिंह, पंकज पराशर, मनोज शांडिल्य, अरुणाभ सौरभ, चंदन कुमार झा और उमेश पासवान शामिल थे। पठित कविताओं में गीत, गजल और मुक्त छंद की कविताएँ शामिल थीं, जिनमें मानवमन की सूक्ष्म अभिव्यक्ति से लेकर परिवार, समाज और देश–दुनिया की स्थितियों, विसंगतियों आदि के चित्रण के साथ सामाजिक सरोकारों का चित्रण किया गया था। कविता–पाठ सत्रों का कुशल संचालन श्री अमलेंदु शेखर पाठक ने किया।

मौसम खराब होने के बावजूद बड़ी संख्या में मैथिली भाषा एवं कविता के प्रेमियों की उपस्थिति उत्साहवर्धक रही।

(के. श्रीनिवासराव)